E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

महाभारत युद्ध : साक्ष्यों का अभिनव चिन्तन

[1]डॉ॰ भगत सिंह, [2]संजीव कुमार

[1]प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्त्व विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

[2]शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्त्व विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.13741810

शोध सार :

महाभारत युद्ध भारतीय संस्कृति का एक केंद्रीय तत्व है, जिसे विभिन्न ऐतिहासिक और सांस्कृतिक साक्ष्यों के माध्यम से समझा जा सकता है। इस शोध में, महाभारत युद्ध के विभिन्न साक्ष्यों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें पुरातात्त्विक खोजें, साहित्यिक संदर्भ और ऐतिहासिक लेख शामिल हैं। शोध ने यह दर्शाया है कि महाभारत युद्ध के वर्णन में धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों का समावेश है, जो युद्ध की वास्तविकता और इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है। यह निष्कर्ष निकलता है कि महाभारत युद्ध केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं बल्कि भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो समाज के सोच और परंपराओं को प्रभावित करता है।

कुंजीशब्द : पुरातात्त्विक, दृष्टिकोण, पुरातात्त्विक, दृषद्वती, सांस्कृतिक, अक्षौहिणी आदि।

1. विषय विस्तार :

महाभारत महाकाव्य तत्कालीन युग का दर्पण है यह भारतीय साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसे हजारों वर्षों से भारतीय परम्परा व संस्कृति ने जीवन्त बनाए रखा । महाभारत भारतीय साहित्य का ही नहीं वरन् विश्व साहित्य का अद्भुत ग्रन्थ है। [1] इस ग्रन्थ में वर्णित नगरों का प्रख्यात पुरातात्त्विद प्रो॰ बी॰ बी॰ लाल ने पारम्परिक विवरण के द्वारा पुरातात्त्विक प्रमाणों से जोड़ने का प्रयास किया है। महाभारत की प्रमुख कथा से जुड़े अधिकांश महत्त्वपूर्ण स्थलों ने अपने निम्न स्तरों से एक संस्कृति के ठोस प्रमाण दिए हैं, इस संस्कृति को पुरातात्त्विविदों द्वारा चित्रित धूसर–मृदभांड (च्ळॅ) संस्कृति का नाम दिया गया है। [2]

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

महाभारत में प्राप्त विभिन्न विषयों के वर्णन का स्वरूप विश्वकोश सदृश है और वही शताब्दियों से इसकी लोकप्रियता का कारण है। वास्तव में स्वयं महाभारत में यह कथन उद्धृत है "यहाँ जो भी हैं अन्यत्र पाया जा सकता है । जो नहीं हैं अन्यत्र नहीं पाया जा सकता है।" वस्तुतः इस प्रकार की महान् कृति किसी एक व्यक्ति की हस्तकृति नहीं हो सकती थी न ही इसकी रचना किसी एक ही समय में की गई होगी। विद्वानों ने महाभारत में जैसा कि आज यह है कम से कम तीन प्रभावों की पहचान की है। [3] पहला कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास द्वारा है जिसमें 8800 छंद हैं 'जय' कहा है। [4] इसी ऐतिहासिक विजय को 'महाभारत' कहा गया है। दूसरा वैशपायन द्वारा लिखित हैं जिसमें 24000 छंद है इसे 'भारत' कहा गया है। तीसरा (वर्तमान स्वरूप) सौत्र द्वारा रचित हैं जिसमें एक लाख छंदों की रचना की गई हैं, इसे 'महाभारत' कहा गया है। [5]

महाभारत का मूल विषय भरत वंशजों (पाण्डवों व कौरवों) के बीच होने वाला युद्ध हैं। पाणिनि सूत्र में उल्लिखित हैं कि संग्रा में प्रयोजन योद्धभ्यः अर्थ–योद्धाओं के नाम पर युद्ध का नाम रखा जाता है। चूंकि कौरव और पांडव दोनों भरत वंशी थे इसलिए वे भारत नाम से अभिहित हुए और भरत वंश के वीरों के बीच हुए युद्ध की संज्ञा भरतो के महान् संग्राम की महत्ती गाथा है। कुरुक्षेत्र, पूर्व समय में किसी नगर का नाम न होकर एक विस्तृत भूखण्ड के रूप में जाना जाता था विस्तृत भू–भाग तीन भागों में विभाजित था कुरुजंगल कुरुखास व कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र भौगोलिक रूप से सरस्वती, दृषद्वती और आपया नदियों से परिबद्ध था तैत्तिरीय आरण्यक में सर्वप्रथम इसके सीमावर्ती क्षेत्रों का वर्णन मिलता है। जिसके अनुसार इसके दक्षिण में खाण्डव (इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र), उत्तर में सुघ, दक्षिण–पश्चिम में परीणह और इसके भी पीछे मरुभूमि हैं। महाभारत और वामन पुराण के अनुसार सरस्वती और दृषद्वती में मध्य की भूमि कुरुक्षेत्र कहलाती थी। जिसके चारों कोनों में चार यक्षप्रतिष्ठित थे, दक्षिण–पश्चिम में कपिल यक्ष, दक्षिण–पूर्व में मचक्रुक, उत्तर–पश्चिम में अरन्तुक और उत्तर–पूर्व में रन्तुक। कनिंघम के अनुसार–यह पवित्र तीर्थ 160 मील के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है और महाभारत में वर्णित समन्तपंचक से मेल खाता है। इन्होंने एक जनश्रुति के आधार पर यहां 160 तीर्थों के होने की भी चर्चा की है। [6] इसी क्षेत्र में कौरव और पाण्डवों के बीच महाभारत का प्रलयकारी युद्ध हुआ और यहीं भगवान् श्रीकृष्ण ने युद्धस्थल में मोह से ग्रस्त अर्जुन को वर्तमान ज्योतिसर के पास गीता का उपदेश दिया। निःसन्देह इस प्रदेश पर जितना प्रभाव इस घटना का पड़ा उतना किसी भी अन्य घटना का नहीं। कुरुक्षेत्र में राजा कर्ण का टिला, बाणगंगा, अमीन और असंख्य ऐसे ऐतिहासिक स्थल हैं जो आज भी हमें महाभारत के पात्रों और घटनाओं की याद दिलाते हैं। महाभारत महाकाव्य की मूल विषय–वस्तु भरत वंशजों के बीच होने वाली युद्ध की घटना की ऐतिहासिकता न मानकर कल्पनात्मक बताया है। महाभारत के संबंध में मिलने वाले साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक प्रमाणों के परस्पर विरोधाभासी होने के कारण मतभेदों का होना स्वाभाविक है। 14 सितंबर 1975 को डी॰ सी॰ सरकार ने, जो एक प्रसिद्ध पुरोलेखविद्

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

हैं और भारत सरकार के भूतपूर्व प्रधान पुरालेखविद् थे यू॰ एन॰ आई॰ को स्पष्ट रूप से घोषित किया कि महाभारत ऐतिहासिकता से रहित एक दंत कथा है इस वक्तव्य से पूरे देश में विवाद छिड़ गया। [7] उनका कहना है कि महाभारत का मूल केन्द्र बिंदु एक परिवार या जन जाति की शत्रुता एक साधारण युद्ध गान था, जिसके बहुत बाद के काल में महाकाव्य की पुराकथाएं विकसित होती चली गई। [8] इस प्रकार महाभारत युद्ध के मिथक और यथार्थ के विवाद को बल मिला।

महाभारत युद्ध को मिथक मानने वाले विद्वानों का कहना है कि वैदिक साहित्य में महाभारत युद्ध का सन्दर्भ नहीं मिलता। साथ ही साथ चौथी शताब्दी ई॰ पू॰ के साहित्य में भारत युद्ध का उल्लेख नहीं किया गया है। [9] यथार्थ के पक्ष में अपनी बात रखते हुए महाभारत युद्ध की घटना को ऐतिहासिक मानने वालों का यह तर्क हैं कि महाभारत युद्ध की घटना ऋग्वेद के बाद की घटना है, इसलिए ऋग्वेद में इसका उल्लेख नहीं मिलता। वैदिक साहित्य में सामाजिक, धार्मिक कार्यों को अधिक स्थान दिया गया । यही कारण है कि इस प्रकार के साहित्य में युद्ध के लिए कोई स्थान नहीं मिलता। [10] डी॰ सी॰ सरकार का मानना है कि महाभारत का मूल केन्द्र बिन्दु एक परिवार या जन जाति की शत्रुता का साधारण युद्ध गान था। यदि सरकार की बात मान ले और यदि महाभारत युद्ध एक पुश्तैनी लड़ाई थी तो यह समझ से परे हैं कि अन्य पारिवारिक संघर्षों को छोड़कर केवल इसी पारिवारिक युद्ध का चयन सम्पूर्ण भारत में इसे महिमा मंडित क्यों किया गया। यह भी समझना होगा कि कुरुक्षेत्र के आसपास 360 से भी ज्यादा धार्मिक क्षेत्र हैं जिनके नाम महाभारत की घटनाओं एवं पात्रों से जुड़े हुए हैं। [11] एच॰ डी॰ संकालिया का मानना है कि यदि महाभारत युद्ध की तिथि 3000 ई॰ पू॰ अथवा जहां तक कि 1400 ई॰ पू॰ मानी जाए, तो इसका अर्थ होगा कि महाकाव्य के नायक भीम, अर्जुन, कर्ण एवं महाकाव्य के अन्य नायकों ने मामूली लगने वाले पत्थर के टुकड़ों, छोटी गद्दाओं, गुलेल में प्रयोग होने वाले पत्थर के और पक्की मिट्टी के गोलों से युद्ध लड़ा होगा। जबकि जिन अस्त्र–शस्त्रों का महाभारत महाकाव्य में उल्लेख किया गया है वे 600 ई॰ पू॰ तक भी प्रयुक्त होते नहीं दिखाई पड़ते तथा 1100 ई॰ पू॰ से पहले तक तो उनका अस्तित्व था ही नहीं। [12] जहां तक शस्त्रों के प्रयोग का प्रश्न हैं मिराशी, संकालिया के तर्कों का खंडन करते हुए कहते हैं – 'ऋग्वेद में एक वर्णन हैं कि विषपाल का पैर कैसे कटा और कैसे आश्विन ने उसे एक लोहे का पैर दिया 'ऋग्वेद में लिखित अयस (लौहा) ई॰ पू॰ ग्यारहवीं सदी के बाद का नहीं हैं। [13]

जहाँ तक युद्ध में प्रयोग होने वाले लोहे के अस्त्र–शस्त्रों का सम्बन्ध है यह महाभारत युद्ध के पश्चात् 1100 ई॰ पू॰ अतरंजीखेड़ा से प्राप्त हुई है। प्रो॰ विभा त्रिपाठी द्वारा प्रारम्भिक काल की लौह तकनीक का अध्ययन आलमगीरपुर, अहिच्छत्रा, अल्हापुर, बैराट, हस्तिनापुर, कौशाम्बी, जोधपुर, नोह, श्रावस्ती के उत्खनन से प्राप्त उपकरणों पर

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

आधारित है, उनमें विशेष रूप से शिकार के उपकरण जैसे भालाग्र, नुकीले हथियार आदि हैं। [14] पाण्डवों और कौरवों ने अपनी सेना के क्रमशः 7 और 11 विभाग अक्षौहिणी में किये। एक अक्षौहिणी में 21870 रथ 21870 हाथी,, 65610 सवार और 109350 पैदल सैनिक होते हैं। यह प्राचीन भारत में सेना का माप हुआ करता था। हर रथ में चार घोड़े और उनका सारथी होता है। हर हाथी पर उसका हाथीवान बैठता है और उसके पीछे उसका सहायक जो कुर्सी के पीछे से हाथी को अंकुश लगाता है, कुर्सी में उसका मालिक धनुष–बाण से सज्जित होता है। अतः महाभारत काल में जब भारत बहुत समृद्ध देश था, इतनी विशाल सेना का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं, जिसमें की सम्पूर्ण भारत देश के साथ–साथ अनेक विदेशी जनपदों ने भी भाग लिया था। [15] 634 ई॰ पू॰ में चीनी यात्री ह्वेनसांग कुरुक्षेत्र आया और उसने कुरुक्षेत्र से पश्चिम की तरफ अस्थिपुर नामक स्थान के बारे में बताया।

महाभारत युद्ध की घटना में यदि सत्यता का संपुट है तो यह घटना कब घटित हुई इसे लेकर आज तक विद्वानों में विवाद बना हुआ है। विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर विद्वानों ने महाभारत युद्ध से सम्बन्धित तिथियाँ प्रस्तुत की हैं । महाभारत के युद्ध को दो महान् कालों–द्वापर तथा कलियुग के मध्य एक विभाजक रेखा बताया गया है। [16] ज्योतिष या नक्षत्र विज्ञान, वैदिक व संस्कृत साहित्य, ऐतिहासिक अभिलेख व पुरातत्त्व के माध्यम से विद्वानों ने महाभारत युद्ध की तिथियों को निर्धारण करने का आधार बनाया है।

इनके द्वारा निर्धारित की गयी तिथियाँ महाभारत महाकाव्य में वर्णित अन्तः साक्ष्यों पर आधारित हैं, किन्तु उनमें से अधिकांश ऐसे कथ्य हैं जो मुख्य कथा से प्रमाणिक नहीं हैं। उनमें से अधिकांशतः बाद में जोड़े गये हैं। हालांकि दूसरी ओर कुछ निश्चित तथ्य भी हैं जो कि प्रामाणिक हैं तथा युद्ध की कहानी का आन्तरिक भाग हैं।

महाभारत युद्ध की तिथि निर्धारण का प्रयास किया गया है। पुराण इस बात से एकमत हैं कि परीक्षित के जन्म तथा नन्द (424 ई॰ पू॰) के राज्याभिषेक के बीच 1000 वर्षों का अन्तर है। पुराण भी यह कहते हैं कि, दस नक्षत्र बीच में बीते (एक नक्षत्र का काल 100 वर्ष) इस प्रकार स्पष्ट है कि पुराणों के अनुसार परीक्षित व नन्द के बीच एक हजार वर्षों का अन्तर है। इस आधार पर महाभारत युद्ध की तिथि 1424 ई॰ पू॰ होती है। [17]

अतः पुराणों के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि महाभारत युद्ध के बाद एक राजनैतिक शताब्दी का अंत हो गया। [18] बी॰ बी॰ लाल ने पुरातत्त्व के आधार पर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है। वैदिक ओर सम्बन्धित साहित्य को आधार बनाकर हेमचन्द्र राय चौधरी द्वारा बताई गई तिथि पर विचार करते हुए उसका समर्थन किया है। अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित, युधिष्ठिर के बाद सिंहासनारूढ़ हुए। पुराणों की वंशावली के

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

अनुसार इनसे पाँचवें निचक्षु थे जिनके समय बाढ़ आने पर हस्तिनापुर डूब गया था। [19] कौशाम्बी में राज्य कर रहे उदयन वंशावली के आधार पर परीक्षित से 25 वें शासक थे, उदयन बुद्ध के समकालीन थे। बुद्ध का महापरिनिर्वाण 487 ई॰ पूर्व हुआ।

इस प्रकार पौरव नृपतियों में प्रत्येक के राज्य काल के लिए चौदह वर्ष अनुमानित कर दिए जायें तो 24 x 24 कुल 336 वर्ष हुए। 500 ई॰ पू॰ में 336 वर्ष देने पर कुल 836 ई॰ पू॰ होता है। इसकी पुष्टि पुरातात्त्विक स्तर से प्राप्त रेडियो कार्बन विधि की तिथियों से भी होती है। हस्तिनापुर में भी बाढ़ के साक्ष्यों की पुष्टि होती है। [20] ऐहोल अभिलेख के माध्यम से महाभारत युद्ध की तिथि ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। ऐहोल (कर्नाटक) जैन मंदिर से प्राप्त प्रस्तर अभिलेख है जो चालुक्य नरेश पुलकेशीयन (609–642 ई॰) का है। इसके अनुसार इस मंदिर का निर्माण महाभारत युद्ध के 3736 वर्ष तथा शक राजाओं के 556 शक काल को आधार मानकर (556+78) = 634 ई॰ अनुसार (3736–634 ई॰) 3102 ई॰ पू॰ महाभारत युद्ध की तिथि हमारे सामने प्रस्तुत होती है। [21]

इस प्रकार महाभारत युद्ध की कोई एक निश्चित तिथि अभी तक निर्धारित नहीं की जा सकी है। इस विषय में संक्षिप्तः यह अवश्य कहा जा सकता है कि खगोलीय गणना के प्रमाणों से महाभारत युद्ध की तिथि 15वीं शताब्दी ई॰ पू॰ के लगभग ठहरती हैं जबकि पौराणिक आंकड़े इसे दसवीं–नवीं ई॰ पू॰ बताते हैं। पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके बाद की तिथि का समर्थन करते हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्तर भारत ने अनेक पुरास्थलों पर सर्वेक्षण एवं उत्खनन हुए है। इन उत्खननों से हमें विभिन्न संस्कृतियों की झलक मिलती है। विद्वानों की चेष्टा रही हैं कि भारतीय साहित्यिक परम्परा को कथानक एवं मिथक के दायरे से निकालकर तर्कपूर्ण आधार दिया जाय। भारत में पुरातत्त्वविदों द्वारा महाभारत की ऐतिहासिकता एवं मौलिक महाभारत काल की मूल संस्कृति पर प्रकाश डालने के लिए बहुसंख्यक प्रयास नहीं किए गए हैं फिर भी, वास्तविक इच्छाशक्ति के साथ जो एक प्रयास हुआ है वह भूमि पर कार्य करने वाले एक प्रख्यात पुरातत्वविद् प्रो॰ बी॰ बी॰ लाल द्वारा किया गया है।

पुरातात्त्विक साक्ष्यों के संदर्भ में हम इन संस्कृतियों के क्रम की विवेचना कर सकते हैं जिन्हें पुरातत्त्व ने महाभारत कथा के कल्पित स्थानों को खोज पाने में सफलता पाई है। यह हरियाणा और राजस्थान की प्राचीन सरस्वती–दृषद्वती घाटी और उत्तर प्रदेश की गंगा घाटी के मध्य का क्षेत्र है। [22] बी॰ बी॰ लाल ने चित्रित–धूसर पात्र परम्परा का सम्बन्ध महाभारत संस्कृति के साथ स्थापित किया है। महाभारत में उल्लिखित हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, इन्द्रप्रस्थ, काम्पिल्य, कुरुक्षेत्र बैराट और मथुरा आदि के निचले स्तरों से चित्रित–धूसर पात्र परम्परा

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

मिलने के कारण यह प्रतीत होता है कि इन सभी पुरास्थलों पर एक ही संस्कृति के लोग निवास करते थे। ऐसा माना जा सकता है कि चित्रित–धूसर पात्र परम्परा के किसी चरण में महाभारत में वर्णित कौरव–पाण्डवों के युद्ध का सम्बन्ध रहा है। [23]

महाभारत युद्ध में प्रयोग हुए अधिकांश हथियार, जिनका कुरुक्षेत्र के महान् युद्ध में प्रयोग हुआ था, धातु के बने मालूम पड़ते हैं जिसमें लोहा भी संभवतः शामिल था। दक्षिण एशिया में पुरातात्त्विक खोज से पता चलता है कि भारत में लोहे की तकनीक का विकास सिर्फ 1000 ई॰ पू॰ के लगभग हुआ। यह +100 या 200 वर्ष होगा। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इससे ज्यादा नहीं हो सकता है। [24] कुरुक्षेत्र जो महाभारत युद्ध का स्थल है वहाँ से कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर हुए हैं जो भगवानपुरा में की खुदाईयों से प्राप्त चित्रित–धूसर मृदभांड से जुड़े हैं और जो उत्तरवर्ती हड़प्पा मृद्भांडों से घुले मिले हैं। भगवानपुरा के उत्खनन से चित्रित–धूसर पात्र परम्परा के तीन चरण दृष्टिगत होते हैं। प्रथम चरण में भवनों का निर्माण बांस–बल्लियों की दिवालें बनाकर किया गया था। द्वितीय में मिट्टी की दीवालें बनायी जाने लगी थी। तृतीय और अन्तिम चरण में भट्ठे में पकी हुई ईंटों का प्रयोग भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया था। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भगवानपुरा के तीनों चरणों से लोहे की कोई सूचना नहीं मिली हैं। [25] इस प्रकार स्पष्ट हैं, महाभारत का संबंध जहां बी॰ बी॰ लाल ने चित्रित– धूसर पात्र परम्परा से स्थापित कर, पुरातत्त्व के माध्यम से विवाद को सुलझाने का प्रयास किया है वहीं दूसरी तरफ भगवानपुरा, जो कुरुक्षेत्र, युद्ध स्थल के नजदीक है यहां से लोहे की प्राप्ति न होना तथा महाभारत सम्बन्धित अन्य पुरास्थलों से युद्ध के ठोस पुरातात्त्विक साक्ष्य नहीं मिलना कहीं ना कहीं संदेह प्रकट करते हैं।

महाभारत महाकाव्य के अनुशीलन में इतना ही कहा जा सकता हैं कि महाभारत एक महाकाव्य हैं। महाकाव्य के लक्षणों के अनुसार अतिशयोक्ति होना इसका स्वाभाविक गुण है। महाकाव्य के अन्तः साक्ष्यों के अनुसार यह एक ऐतिहासिक ग्रन्थ भी हैं। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित महाकाव्य हमेशा मिथक एवं सच्चाई अथवा तथ्यों एवं कल्पित कथा का अनोखा मिश्रण होता है। वास्तव में कभी–कभी ही यह पूर्ण कहानी या पूर्ण सच होता है। अतः वर्तमान स्थिति में उचित प्रश्न हो सकता है। कितनी सच्चाई एवं कितना मिथक, सिर्फ मिथक या सच्चाई नही।

2. निष्कर्ष :

शोध से यह स्पष्ट होता है कि महाभारत युद्ध केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग भी है। विभिन्न साक्ष्यों, जैसे पुरातात्त्विक अवशेष, साहित्यिक ग्रंथ और ऐतिहासिक दस्तावेज, ने इस युद्ध के धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को उजागर किया है। यह शोध दर्शाता है कि महाभारत युद्ध का विवरण और इसकी पुनरावृत्ति भारतीय समाज की धार्मिक मान्यताओं और

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। इसके अलावा, यह भी सिद्ध होता है कि युद्ध के धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण ने भारतीय संस्कृति और विचारधारा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। कुल मिलाकर, महाभारत युद्ध के साक्ष्यों का अभिनव चिन्तन यह दर्शाता है कि यह केवल एक युद्ध की कथा नहीं बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

3. संदर्भग्रंथ सूची :

1. अरुण प्रकाश पाण्डेय, महाभारत कालीन संस्कृति के पुरातात्त्विक आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2009, पृ॰ 17.
2. उपिन्द्र सिंह, दिल्ली : प्राचीन इतिहास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 2000, पृ॰ 109.
3. एस॰ पी॰ गुप्ता, एवं के॰ एस॰ रामचंद्रन, महाभारत मिथ एण्ड रिएलिअी : डिफरिंग व्यूज, आरबी आगम प्रकाशन, दिल्ली, 1976, पृ॰ 3.
4. एच॰ ए॰ फड़के, हरियाणा एन्शियन्ट एण्ड मिडिवल, हरमन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1990, पृ॰ 3.
5. अरूण प्रकाश, पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, 2009, पृ॰ 4.
6. अरूण प्रकाश, पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ॰ 19.
7. जसवन्त सिंह नलवा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कुरुक्षेत्र, 2008, पृ॰ 21–22.
8. एस॰ पी॰ गुप्ता, एवं के॰ एस॰ रामचंन्द्रन, पूर्वनिर्दिष्ट, 1976, पृ॰ 4.
9. उपिन्द्र सिंह, पूर्वनिर्दिष्ट, 2010, पृ॰ 97.
10. अरूण प्रकाश पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, 2009, पृ॰ 21.
11. उपिन्द्र सिंह, पूर्वनिर्दिष्ट, 2010, पृ॰ 97.
12. उपिन्द्र सिंह, ***पूर्वनिर्दिष्ट***, 2010, पृ॰ 100.
13. उपिन्द्र सिंह, ***पूर्वनिर्दिष्ट***, 2010, पृ॰ 104.
14. अरूण प्रकाश पाण्डेय, ***पूर्वनिर्दिष्ट***, 2009, पृ॰ 81.
15. एस॰ बी॰ रॉय, डेट ऑफ महाभारत बैटल, दा एकडमिक प्रेस, गुरुगाम, 1976, पृ॰ 124.
16. एच॰ ए॰ फड़के, पूर्वनिर्दिष्ट, 1990, (प्रथम संस्करण), पृ॰ 17.
17. अरूण प्रकाश पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, 2009, पृ॰ 23.
18. अरूण प्रकाश पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, 2009, पृ॰ 24.
19. सूरजभान, प्रीहिस्टारिकल ऑर्किलॉजी शरावती एण्ड दृषदवती वैली, पीएच॰ डी॰ थीसिस, 1972.

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

20. पी॰ वी॰ काणे, हिस्ट्री ऑफ हिन्दू धर्मशास्त्र, भण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इनस्टि्टयूट पूणे, 1962, पृ॰ 557–58, 681.

21. श्रीराम साठे, सर्च फॉर दी ईयर ऑफ महाभारत वॉर, नवभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1983, पृ॰ 35.

22. उपिन्दर सिंह, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ॰ 120.

23. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, प्राच्च विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2000, पृ॰ 521.

24. उपिन्दर सिंह, पूर्वनिर्दिष्ट, 2010, पृ॰ 120.

25. जय नारायण पाण्डेय, पूर्वनिर्दिष्ट, 2000 पृ॰ 523.